नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

भारतीय सामाजिक कार्य दिवस के उपलक्ष्य में नानाजी देशमुख पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

वर्धा, 7 अक्टूबर 2019 : भारत में समाज कार्य से जुड़े संस्थानों द्वारा भारत रत्न नानाजी देशमुख के जन्मदिन 11 अक्टूबर को सामाजिक कार्यों में उनके महान योगदान की स्मृति में भारतीय सामाजिक कार्य दिवस के रूप में मनाया जाएगा। इस वर्ष **11** अक्टूबर, को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा द्वारा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली के सहयोग और भारतीय समाज कार्य परिषद की अकादमिक साझेदारी में 'नानाजी देशमुख : भारतीय सामाजिक कार्य के प्रतीक' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है।

संगोष्ठी का मुख्य विषय नानाजी देशमुख के विचारों और गतिविधियों पर केंद्रित होगा। संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य नानाजी देशमुख के प्रयोगों का दस्तावेजीकरण करना, उनके सामाजिक कार्य मॉडल और प्रथाओं का पता लगाना, भारत में सामाजिक कार्य शिक्षा को मजबूत करने के लिए नानाजी देशमुख के कार्य द्वारा विकसित स्वदेशी ज्ञान को शामिल करना, सामाजिक कार्यों में उनके प्रयोगों को शामिल करना, पाठ्यक्रम और उनके सामाजिक कार्य प्रथाओं, लेखन और प्रयोगों पर सिद्धांत विकसित करना है।

प्रख्यात सामाजिक चिंतक कृष्ण गोपाल जी संगोष्ठी के मुख्य अतिथि होंगे। प्रख्यात लेखक, सामाजिक चिंतक, शिक्षक और भारतीय शिक्षण मंडल के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री मुकुल कानिटकर ने संगोष्ठी के लिए मुख्य वक्ता के लिए सहमति व्यक्त की है। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के महात्मा गांधी फ्यूजी गुरुजी सामाजिक कार्य अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रो. मनोज कुमार सेमिनार निदेशक हैं। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के महात्मा गांधी फ्यूजी गुरुजी सामाजिक कार्य अध्ययन केंद्र के संकाय सदस्य डॉ मिथिलेश कुमार सेमिनार के संयोजक हैं और डॉ बिष्णु मोहन दाश सह-संयोजक हैं। नई दिल्ली स्थित विकास पत्रकार और सामाजिक वैज्ञानिक श्री सिद्धेश्वर शुक्ला, सेमिनार सलाहकार हैं।

संगोष्ठी के संबंध में शुभकामनाएँ देते हुए महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा कि "समकालीन सामाजिक कार्य राजनीतिक शक्ति के संदर्भ में विकसित किया गया है। हालाँकि, भारत में, समाज के लिए काम करना एक व्यक्ति की सद्भावना और नेक इरादों का परिणाम रहा है। गोंडा से चित्रकूट तक नानाजी देशमुख के सामाजिक कार्यों का प्राथमिक उद्देश्य समाज के लिए समर्पित व्यक्तियों का निर्माण करना था। ऐसा इसलिए है क्योंकि यदि ऐसे व्यक्ति बनाए जाते हैं, तो सामाजिक कार्य समाज द्वारा आधारित और समर्थित होंगे, जिससे पूरे समाज को मुक्ति मिलेगी। यह नानाजी देशमुख के जन्मदिन को भारतीय सामाजिक कार्य दिवस के रूप में मनाने के लिए बहुत प्रासंगिक है क्योंकि वह एक ऐसे व्यक्तित्व थे जिनके सामाजिक कार्यों का परिप्रेक्ष्य महात्मा गांधी, विनोबा भावे और दीनदयाल की परंपरा में है"।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली के सदस्य सचिव डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने संगोष्ठी के संबंध में शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि "भारत में एक अलग सामाजिक फाइबर है जो यूरोपीय सामाजिक सोच से परे है। समाज कार्य कर्तव्य और जिम्मेदारी के रूप में यूरोप में एक पेशा बन गए हैं। यह सही समय है कि हम भारतीय दृष्टिकोण से सामाजिक कार्य का सार समझें। नाना जी देशमुख एक ऐसे सामाजिक प्रतीक रहे हैं जिन्होंने हमें सिखाया कि समाज की निस्वार्थ सेवा कैसे करें। उनके जन्मदिन पर सामाजिक कार्य शिक्षा पर चर्चा करना अत्यधिक प्रासंगिक है।

संगोष्ठी के अपने संदेश में श्री मुकुल कानिटकर ने पेशेवर सामाजिक कार्यों में नानाजी देशमुख के योगदान पर जोर दिया। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि भारत में समाज सेवा की परंपरा बहुत प्राचीन और गौरवशाली है। छान्दोग्य उपनिषद में ऋषि अवस्तिपाद, वैश्वानर साधना के बारे में बात करते हैं जो सर्वव्यापी देवत्व की पूजा करते हैं। स्वामी विवेकानंद द्वारा मानव सेवा भगवान की पूजा है के रूप में परिभाषित किया गया था। महात्मा गांधी ने इसे गरीबों या दरिद्र नारायण की पूजा कहा। भारत रत्न नानाजी देशमुख ने सामाजिक सेवा की इस अवधारणा को पेशेवर सामाजिक कार्यों में संस्थागत रूप दिया। उन्होंने आगे बताया कि "सर्व भवन्तु सुखिनः (सभी को खुश रहने दें) के पारंपरिक ज्ञान को बुद्धतथा गांधी और विनोबा भावे द्वारा बहुजन हिताय बहुजन सुखाय (सभी का कल्याण, सभी का कल्याण) के रूप में प्रसारित किया है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने सर्वोदय (सभी का कल्याण) के लिए अंत्योदय (अंतिम व्यक्ति का कल्याण) का एक व्यावहारिक तरीका दिया। भारत रत्न नानाजी देशमुख ने ग्रामोदय में इस अवधारणा को संस्थागत बनाया जिसमें उन्होंने पेशेवर सामाजिक कार्यकर्ता बनाए। आत्मनिर्भर समाज का निर्माण निःस्वार्थ समाज सेवा के माध्यम से प्राप्त किया जाने वाला एक आदर्श है, जिसे व्यावसायिक सामाजिक कार्यों के माध्यम से संस्थागत रूप देना होगा। आधुनिक समय में चुँकि नानाजी देशमुख ने भारतीय दृष्टिकोण से इसे व्यवहारिक रूप दिया इसलिए उनके जन्मदिन को भारतीय सामाजिक कार्य दिवस के रूप में मनाया जाना चाहिए।

भारतीय समाज कार्य परिषद (बीएसकेपी) सामाजिक कार्य पेशेवरों, शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं और छात्रों का एक राष्ट्रीय स्तर का संगठन है। 30 जून 2018 को अपने 'वर्धा घोषणा' में, भारतीय समाज कार्य परिषद ने सर्वसम्मति से 11 अक्टूबर को नानाजी देशमुख के जन्मदिन को भारतीय सामाजिक कार्य दिवस के रूप में मनाने का प्रस्ताव अपनाया। तब से भारतीय सामाजिक कार्य दिवस पूरे देश में केंद्रीय और प्रांतीय सामाजिक कार्य संस्थानों में मनाया जा रहा है। भारतीय समाज कार्य परिषद के राष्ठीय अध्यक्ष एवं टूम्कुर विश्वविद्यालय, कर्नाटक के कुलपति प्रोफेसर वाई.एस. सिद्देगौड़ा ने इस अवसर पर शुभकामना देते हुए कहा है कि नानाजी देशमुख के जरूरतमंद लोगों की सेवा करने के तरीके से शिक्षण और अभ्यास तथा सामाजिक कार्यों के प्रसार में सहयोग मिलेगा। भारतीय समाज कार्य परिषद के राष्ठीय महासचिव और डॉ बी आर अम्बेडकर कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के संकाय सदस्य डॉ बिष्णु मोहन दास ने कहा कि "नानाजी देशमुख भारत सामाजिक कार्य का एक प्रतीक है। ग्रामीणों और वनवासियों के आत्मनिर्भरता, करुणा और त्याग के मूल्यों से परिभाषित सतत विकास के प्रति उनकी गहरी प्रतिबद्धता थी। उन्होंने सामाजिक कार्य अभ्यास को एक नया आयाम दिया है, जिसे समाज कार्य पाठ्यक्रम में अनुकरण किया जाना चाहिए।